विचार बिन्दु

योग्य पति अपनी पत्नी को सम्मान की अधिकारिणी बना देता है। –मनु

चिंतित पीढ़ी की चिंता करने का वक़्त

तेजी से बढ़ते इंटरनेट का लाभ उठाते हुए दो दशक पहले अमेरिका की प्रौद्योगिकी कंपनियों ने दुनिया को बदलने वाले डिजिटल उत्पाद बनाये। तब जबरदस्त आशाबंधी थी कि इन उत्पादों से जीवन आसान, अधिक मज़ेदार और अधिक काम का बन जाएगा। उन उत्पादों में से कुछ ने लोगों को जोड़ने और आपस में संवाद करने में मदद की तो ऐसा लगा कि वे लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के लिए एक वरदान साबित होंगे। सबको ऐसा लगा मानो दुनिया नये युग की दहलीज़ पर खड़ी है और वे कंपनियां मानवता के लिए अलौकिक उपहार लायी हों। लेकिन जल्दी ही यह तकनीकी उद्योग केवल वयस्कों के जीवन को ही नहीं बदलने लगा, बल्कि उसने बच्चों का जीवन भी बदलना शुरू कर दिया। तब बच्चे और किशोर खूब टेलीविजन कार्यक्रम देख रहे थे और उनके असर में आ रहे थे, लेकिन नई तकनीकें कहीं अधिक पोर्टेबल, व्यक्तिगत और आकर्षक थीं। माता-पिता यह जानकर राहत महसूस करने लगे कि स्मार्टफोन या टैबलेट से बच्चा घंटों तक खुश और शांत रह सकता है। क्या नई डिजिटल तकनीक सुरक्षित थी यह कोई नहीं जानता था। क्योंकि हर कोई ऐसा कर रहा था, इसलिए सभी ने मान लिया कि यह ठीक ही होगी। कंपनियों ने अपने उत्पादों के बच्चों और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर कोई शोध नहीं किया और किया भी तो दिखावे का। उन्होंने तकनीक का स्वास्थ्य पर प्रभावों का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं के साथ अपना कोई डेटा भी साझा नहीं किया।जब इस बात के बढ़ते प्रमाण मिलने लगे कि उनके उत्पाद युवाओं को नुकसान पहुंचा रहे हैं, तो वे साफ इनकार करने, भ्रम फैलाने, और जनसंपर्क अभियान चलाकर अपने बचाव में लग गए। बहुत से अध्ययन बताते हैं कि युवाओं को लुभाने और उन्हें जोड़ने के लिए मनोवैज्ञानिक तरकीबों का इस्तेमाल करने वाली कंपनियां सबसे बुरी अपराधी थीं। उन्होंने बच्चों को उस वय के दौरान फंसाया जब वे मानसिक विकास के नाज़ुक चरण में थे। एक अवस्था होती है जब किशोरों का मस्तिष्क आने वाली उत्तेजना के जवाब में तेजी से रीवायरिंग करता है। सोशल मीडिया कंपनियों ने बच्चों की इस अवस्था में उनमें लत लगाने वाली सामग्री का जखीरा तैयार किया जिसने उनके व्यक्तिगत व सामाजिक मेलजोल को खत्म कर उनके बचपन को बदल दिया। कुछ आलोचक तो यहां तक कहते हैं कि उन्होंने मानव विकास को ही लगभग अकल्पनीय पैमाने पर बदल दिया। वे कहते हैं कि इनमें से कुछ कंपनियां तम्बाकू और वेपिंग उद्योगों की तरह व्यवहार करने लगी, जिन्होंने अपने उत्पादों को नशे की लत को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया था और उनकी नाबालिगों तक पहुंच को रोकने वाले कानूनों को धता बताई। हम उनकी तुलना उन तेल कंपनियों से भी कर सकते हैं जिन्होंने इस बात के प्रमाण मिलने पर भी कि सीसा मिले पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के प्रदूषण से हर साल लाखों बच्चों के मस्तिष्क के विकास में बाधा उत्पन्न हो रही थी, ऐसे पेट्रोल पर प्रतिबंध लगाने के खिलाफ लड़ाई लड़ी। बच्चों का संज्ञानात्मक विकास बाधित हो रहा था और उनमें असामाजिक व्यवहार की दर बढ़ रही थी फिर भी, तेल कंपनियों ने सीसा मिले पेट्रोल का उत्पादन और बिक्री जारी रखी थी। बेशक, आज की बड़ी सोशल मीडिया कंपनियों और 20वीं सदी के मध्य की बड़ी तंबाकू और तेल कंपनियों के बीच बहुत बड़ा अंतर है। मसलन सोशल मीडिया कंपनियां ऐसे उत्पाद बना रही हैं जो वयस्कों के लिए उपयोगी हैं, उन्हें जानकारी, नौकरी और दोस्त खोजने में मदद कर रही हैं; खरीदारी और राजनीतिक आयोजन को अधिक कुशल बना रही हैं; और हजारों तरीकों से जीवन को आसान बना रही हैं। लेकिन हममें से ज़्यादातर लोग तंबाकू रहित दुनिया में तो रहना पसंद करेंगे, लेकिन सोशल मीडिया से दूरी नापसंद करेंगे क्योंकि उन्हें वह कहीं ज़्यादा मूल्यवान तथा मददगार लगता है। हालांकि कुछ वयस्कों को भी सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन गतिविधियों की लत की समस्या है, लेकिन तंबाकू, शराब या जुए की तरह हम आम तौर पर यह उन्हीं पर छोड़ देते हैं कि वे अपना फ़ैसला खुद लें। लेकिन बच्चों व किशोरों के लिए यह ठीक नहीं है। मानव मस्तिष्क का प्रोत्साहन चाहने वाला हिस्सा जल्दी परिपक्व हो जाता है, लेकिन मस्तिष्क का फ्रंटल कॉर्टेक्स, जो आत्म-नियंत्रण, संतुष्टि पाने में धीरज बरतने और प्रलोभन का प्रतिरोध कर सकने के लिए जरूरी होता है, वह 20 वर्ष की उम्र तक पूरी क्षमता तक नहीं विकसित हो पाता है। इसलिए बच्चे किशोरावस्था के विकास के नाजुक दौर में होते हैं। जब वे यौवन की दहलीज़ में कदम रखते हैं तब अक्सर सामाजिक रूप से असुरक्षित होते हैं। वे आसानी से साथियों के दबाव में आ जाते हैं, और किसी भी ऐसी गतिविधि की ओर आसानी से आकर्षित हो जाते हैं जो उन्हें अपने समूह में सामाजिक मान्यता प्रदान करती है। हम किशोरों को तंबाकू या शराब खरीदने या जुआघर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते हैं, मगर सोशल मीडिया से नहीं रोकते, जबकि सोशल मीडिया का उपयोग करने की कीमत वयस्कों की तुलना में किशोरों को अधिक चुकानी पड़ती है। इक्कीसवीं सदी की नई पीढ़ी इतिहास की वह पहली पीढ़ी बन गई है जिसने यौवन के दौर से गुजरते हुए अपनी जेब में एक पोर्टल रखा जो उन्हें आस-पास के लोगों से दूर और एक वैकल्पिक आभासी दुनिया में ले गया। जानकारों के मुताबिक यह पोर्टल बच्चों और किशोरों के लिए अनुपयुक्त होता है। आभासी दुनिया में सामाजिक रूप से सफल होने के लिए किशोर अपना ऑनलाइन ब्रांड बनाते हुए अपनी चेतना का एक बड़ा हिस्सा हमेशा के लिए गिरवी रख देते हैं। मनोचिकित्सक कहते हैं कि अपने साथियों से स्वीकृति पाने तथा ऑनलाइन शर्मिंदगी से बचने के लिए उन्हें ऐसा करना पड़ता है। मनोचिकित्सक इसे किशोरावस्था की ऑक्सीजन और दुःस्वप्न दोनों कहते हैं।

> **मानव मस्तिष्क का प्रोत्साहन चाहने वाला हिस्सा जल्दी परिपक्व हो जाता है, लेकिन मस्तिष्क का फ्रंटल कॉर्टेक्स, जो आत्म-नियंत्रण, संतुष्टि पाने में धीरज बरतने और प्रलोभन का प्रतिरोध कर सकने के लिए जरूरी होता है, वह 20 वर्ष की उम्र तक पूरी क्षमता तक नहीं विकसित हो पाता है। इसलिए बच्चे किशोरावस्था के विकास के नाजुक दौर में होते हैं। जब वे यौवन की दहलीज़ में कदम रखते हैं तब अक्सर सामाजिक रूप से असुरक्षित होते हैं।**

नई पीढ़ी के किशोर हर दिन कई घंटे दोस्तों, परिचितों और दूर के प्रभावशाली लोगों की चमकदार खुशनुमा पोस्ट को स्क्रॉल करने में बिताते हैं। वे ऑटोप्ले और एल्गोरिदम द्वारा बनाए गए वीडियो और स्ट्रीम किए गए मनोरंजन की बाढ़ में बहते हैं। ये वीडियो और स्ट्रीम उन्हें यथासंभव लंबे समय तक ऑनलाइन रखने के लिए डिज़ाइन किए गए होते हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि आज के किशोर अपने दोस्तों और परिवारों के साथ खेलने, आपस में बात करने, यहां तक कि आंख से आंख मिलाने से कतराने लगे हैं जिससे व्यक्ति के विकास के लिए जरूरी उनकी सामाजिक व्यवहारों में भागीदारी कम हो रही है। इसलिए, इस पीढ़ी के सदस्य किस प्रकार नये तरीकों से बड़े हो रहे हैं, यह भी परीक्षण का विषय हैं। वे समुदायों की उस वास्तविक दुनिया से बहुत दूर है जिसमें मानव अब तक विकसित हुआ है। प्रौद्योगिकी-जनित यह रीवायरिंग सिर्फ़ उन तकनीकों में बदलाव की नहीं है जो बच्चों के दिमाग को आकार देता हैं बल्कि एक ऐसे कथानक के बनने की भी है जिसमें बच्चों को ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षा देने और वास्तविक दुनिया में उनकी स्वायत्तता को सीमित करने की दिशा में समाज में बदलाव आ रहा है। हमें यह गंभीरता से देखना होगा कि 'खेल-आधारित बचपन' से 'फ़ोन-आधारित बचपन' में संक्रमण की शुरुआत कैसे हुई? अब जब अधिकांश किशोरों के पास अपना खुद का स्मार्टफ़ोन है और वे व्यापक रूप से इंटरनेट से जुड़े हैं तो उनके पास अपना समय भरने के लिए लैपटॉप कंप्यूटर, टैबलेट, इंटरनेट से जुड़े वीडियो गेम कंसोल की भरमार हैं। मानव विकास पर काम करने वाले मनोवैज्ञानिक अक्सर बचपन और किशोरावस्था के बीच संक्रमण को यौवन की शुरुआत के रूप में चिह्नित करते हैं, लेकिन वे यह भी कहते हैं कि यौवन अलग-अलग बच्चों के लिए अलग-अलग समय पर आता है, और क्योंकि यह हाल के दशकों में कम उम्र में आ रहा है, इसलिए कौमार्य को किशोरावस्था के बराबर मानना अब सही नहीं है। जैसे-जैसे बचपन 'खेल-आधारित' से 'फ़ोन-आधारित' में परिवर्तित होता जा रहा है, कई बच्चे और किशोर घर के अंदर रहकर और ऑनलाइन खेलकर पूरी तरह खुश हैं, लेकिन इस प्रक्रिया में वे उन चुनौतीपूर्ण शारीरिक और सामाजिक अनुभवों से वंचित हो रहे हैं जिनकी सभी को ज़रूरत होती है। साथियों के साथ आभासी संपर्क इन अनुभवात्मक नुकसानों की पूरी तरह भरपाई नहीं कर सकता है। इसके अलावा, जिन बच्चों का खेल का समय और सामाजिक जीवन ऑनलाइन हो गया है वे वयस्कों के स्थानों में भटक रहे हैं। वे वयस्क सामग्री का उपभोग कर रहे हैं, और वयस्कों के साथ ऐसे तरीके से पेश आ रहे हैं जो अक्सर नाबालिगों के लिए अनुचित होते हैं। इसलिए जब माता-पिता वास्तविक दुनिया में उनकी जोखिम और स्वतंत्रता को खत्म करने के लिए काम करते हैं, तो वे अक्सर अनजाने में, बच्चों को आभासी दुनिया में पूरी स्वतंत्रता देते हैं, क्योंकि अधिकांश के लिए यह समझना ही मुश्किल होता है कि वहां क्या चल रहा है। ऐसी हालत में उनमें यह समझ होना तो बहुत दूर की बात है कि क्या प्रतिबंधित किया जाए या इसे कैसे प्रतिबंधित किया जाए। विशेषज्ञों का मानना है कि वास्तविक दुनिया में अतिसंरक्षण और आभासी दुनिया में अल्प संरक्षण की दो प्रवृत्तियों के ही कारण हैं नई युवा पीढ़ी बेचैन और 'चिंतित पीढ़ी' बन रही है। कोई 15 वर्ष पहले तक अपने दोस्तों के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए सबसे उपयोगी उपकरण के रूप में उभरा सोशल मीडिया, मनोवैज्ञानिकों की राय में, अब उनके लिए खतरनाक हो चला है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राजस्व मण्डल अध्यक्ष राजेश्वर सिंह आज सेवानिवृत्त होंगे

राजेश्वर सिंह

अजमेर। राजस्व मण्डल अध्यक्ष राजेश्वर सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा में 35 वर्षों का सुदीर्घ सेवाकाल पूर्ण कर आज सेवानिवृत्त होंगे। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के चन्दौली जनपद के निवासी राजेश्वर सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1989 बैच के अधिकारी हैं। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. (आधुनिक इतिहास) की उपाधि प्राप्त की है।

राजेश्वर सिंह पूर्व में उपखण्ड अधिकारी माउण्ट आबू, जिला कलक्टर, जालोर एवं जयपुर, संभागीय आयुक्त उदयपुर, भरतपुर एवं जयपुर, प्रमुख सचिव लघु उद्योग, पर्यटन, परिवहन, पशुपालन, अतिरिक्त मुख्य सचिव, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग तथा अध्यक्ष, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का पदभार सम्भाल चुके हैं। वर्तमान में सिंह के पास राजस्थान टैक्स बोर्ड एवं राजस्थान गैर कृषि विकास अभिकरण के अध्यक्ष पद का अतिरिक्त कार्यभार भी है। अपनी विस्तृत सेवा अवधि में राजेश्वर सिंह ने गांधी ग्राम योजना, सहकार ग्राम योजना तथा एक ग्राम चार काम योजनाओं के माध्यम से सर्वतोमुखी ग्रामीण विकास को नवीन जनोन्मुखी आयाम प्रदान किया। एक ग्राम चार काम योजना में राज्य के 13000 गांवों में आदर्श तालाब, चरागाह विकास, श्मशान/कब्रिस्तान विकास एवं खेल मैदान विकास के कार्य स्वीकृत किए गये। इसी प्रकार जयपुर जिले में ग्राम बन्धु योजना तथा जालोर में सम्पूर्ण साक्षरता अभियान का सफलतापूर्वक संचालन किया गया।

राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर एवं सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति पद का अतिरिक्त कार्यभार वहन करते हुए श्री सिंह ने आइ.ए.एस., आर.ए.एस. एवं आर.जे.एस. अधिकारियों से छात्रों का संवाद कार्यक्रम, विभिन्न व्याख्यान मालाओं के आयोजन तथा पुस्तक विमर्श एवं शिखरों से साक्षात्कार जैसे नवाचार कर शैक्षणिक समुदाय में अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल की। राजस्व मण्डल अध्यक्ष के रूप राजेश्वर सिंह के कार्यकाल में कोरोना काल की चुनौतियों एवं दो आम चुनावों के बावजूद राजस्व मंडल सहित राज्य के अधीनस्थ राजस्व न्यायालयों में 4 लाख से अधिक मुकदमों का निस्तारण हुआ। इसके अलावा अतिरिक्त संभागीय आयुक्त, राजस्व अपील अधिकारी, अतिरिक्त जिला कलक्टर एवं उपखण्ड अधिकारियों की निर्णय लेखन कार्यशालाओं का आयोजन कर राजस्व न्यायालयों में निर्णय लेखन में गुणवत्ता, त्रुटिहीनता एवं वैधानिकता को सुनिश्चित किया गया। राज्य स्तरीय सर्वश्रेष्ठ निर्णय एवं निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जिसमें आई.ए.एस., आर.ए.एस. राजस्व अधिकारी, अधिवक्ताओं एवं आम नागरिकों ने भाग लिया।

राजेश्वर सिंह की नवाचारी पहल के तहत राजस्व न्यायालयों की कार्य प्रणाली को बेहतर बनाने के लिये अन्य राज्यों के राजस्व मंडलों का अध्ययन कराया जाकर राज्य में श्रेष्ठ मॉडल लागू करने के प्रस्ताव सरकार को भिजवाये गये। इस दौरान न केवल राजस्थान तहसीलदार सेवा के दो बैच के 240 अधिकारियों को नियुक्ति एवं प्रशिक्षण प्रदान किया गया वरन 5600 पटवारियों को भी नियुक्त व प्रशिक्षित कर जिलों में पदस्थापित किया गया।

डीआईएलआरएमपी (डिजिटल इंडिया लैण्ड रिकॉर्ड्स मार्डनाइजेशन प्रोग्राम) के तहत जमाबंदी का सेग्रीगेशन (पृथक्करण) खसरा नक्शों का डिजिटलाइजेशन कराते हुए राज्य की 426 में से 420 तहसीलों को ऑनलाइन कराया गया।

राजेश्वर सिंह के कार्यकाल में राजस्व मण्डल में प्रशासनिक कार्यों के शीघ्र सम्पादन के मद्देनजर ई-फाइल कार्य को पूर्ण प्राथमिकता से लागू किया गया। मंडल में अब तक 30 हजार से अधिक फाइल्स ऑनलाइन होने से कार्य पारदर्शिता एवं समयबद्ध रूप से संपादित हो पा रहे हैं। राजेश्वर सिंह साहित्य, इतिहास, राजनीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र एवं लोक प्रशासन में गहन रूचि रखते हैं तथा उनके लेख, कविताएं एवं कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

साक्षी ही आनंदित रह सकता है

डॉ. रामावतार शर्मा

विज्ञान क्या है इस बात को समझने के लिए हमें कोई पांच सात हजार साल पहले जाना होगा। उस दौर में न तो माइक्रोस्कोप था, न दवाएं थी, न पहिया था और न ही खेती का कोई ज्ञान मनुष्य को था। हमारे पूर्वज आकाश देख कर तारों के बारे में अंदाज लगाया करते होंगे। उनके पास आज के खगोलशास्त्र को सुलभ उपकरणों की तो कल्पना तक नहीं थी। ऐसी ही स्थिति ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में थी परंतु इसका मतलब यह नहीं कि उस समय का मनुष्य सोचता नहीं होगा या जिज्ञासु नहीं होगा। उस समय भी कुछ लोग सोचते, देखते और समझने की कोशिश करते होंगे परंतु साधनों के अभाव में कुछ भी तथ्यात्मक ढूंढ नहीं पाते थे। फिर भी उन्होंने आकाश में घटित हो रही कई पुनरावृतियों को समझा होगा जैसे दिनों का बड़ा या छोटा होना, ग्रहण के चक्र, बरसात के आगमन और विदाई का समय चक्र। इनमें से कुछ बातें आगे चलकर लिपिबद्ध भी हुई जिनको ले कर आज दुनिया के विभिन्न समाज अपने पूर्वजों को अति विकसित समाज सिद्ध करने में जुटे नजर आते हैं।

हर समाज में और हर दौर में चंद लोग वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जीवन जीते हैं और बाकी लोग परंपरावादी तथा अर्ध ज्ञान वाले होते हैं जो सदैव बीत गए समय के अपने प्रभुत्व की बातें करते हैं तथा आज के समय के अपने पिछड़ेपन को ढकने में लगे रहते हैं। यह एक शाश्वत मानसिक अवस्था है जो आगे भी जारी रहेगी। उस काल के लोग भोजन सुरक्षा, पानी की व्यवस्था, सामाजिक सुरक्षा और किसी प्रशासन की उम्मीद लगाते रहे होंगे परंतु समय के लंबे चक्र को देखें तो एक व्यक्ति के जीवन में उस समय कुछ भी नहीं बदलता था। आग की खोज, पत्थरों के हथियार, लोह या पीतल की खोज जैसे कार्य दो सौ या तीन सौ सालों में एक बार होने वाली घटना होती थी इसलिए उस समय के लोग सोचते होंगे कि पृथ्वी पर कुछ भी नहीं बदलता है और जो है वही चिर स्थाई है। इन स्थितियों में चंद जीवनोपयोगी खोजों को चमत्कार का नाम दिया जाने लगा। मिथक एवम् किवदंतियों का जन्म शायद यहीं से प्रारंभ हुआ जो आगे चलकर सदियों बाद बड़े रूप में विकसित हुआ। आगे चलकर इन मिथकों और किवदंतियों को चतुर चालाक लोगों ने जीविकोपार्जन का साधन बना लिया और मिथक तथा किवदंतियां मानव मन पर इस तरह अंकित हो गई कि उन्हें मिटाने का प्रयास करने वाले तथा तर्क आधारित सोच वाले लोगों को समाज का बहुमत सनकी मानने लगा और एक तरह से अनदेखा करने लगा।

उदाहरण स्वरूप कार यात्रा की सुरक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि ड्राइवर कितना सजग है और सड़क सुरक्षा नियमों की कितनी पालना करता है परंतु लोग कोई धार्मिक सूचक अंकित कर, कोई वस्तु जैसे नींबू मिर्च या पुराने टायर का काला टुकड़ा लगा कर सुरक्षित यात्रा की उम्मीद करते हैं। बहुमत का यह व्यवहार कभी नहीं बदलेगा हालांकि विकास का दैनिक उपभोग ये लोग ही करते हैं। मुख से, अंगूठी या हथेली से राख निकालना दृष्टि भ्रम द्वारा संभव है पर उसे लोग चमत्कार मानेंगे परंतु हजारों किलो वजन को लेकर आकाश में उड़ते हवाई

जहाज को किसी चमत्कार की बजाय ईश्वर की देन कहेंगे। इन लोगों के विचारों को बदलने का हर प्रयास असफल रहेगा क्योंकि हजारों साल तक मनुष्य के मस्तिष्क में अंकित किवदंतियां और मिथक अनुवांशिकता का हिस्सा बन गए हैं।

अत्यंत धीमी गति से विकसित हो रहे मानव समाज में कुछ शताब्दियों पहले तेजी से परिवर्तन आने लगे। 16वीं और 17वीं सदी से प्रारंभ हुए वैज्ञानिक सोच और कई आधारभूत खोजों के बाद दुनिया तेज गति से बदलने लगी। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान और फिर उसके बाद भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा पद्धतियों आदि में इतने तीव्र और इतने अधिक परिवर्तन होने लगे कि आज का मनुष्य मानने लगा है कि यहां सब कुछ परिवर्तनशील है और कुछ भी स्थाई नहीं है। यह अति प्राचीन काल की सोच से पूरी तरह उल्टा विचार है। विचार और तार्किक समाधान की यह स्थिति ही विज्ञान है और चूंकि इसके अलग अलग आयामों पर अलग अलग लोग कार्य करने लगे हैं तो ये खोजें तेजी से घटित होने लगी हैं। आज का मनुष्य अपने सारे पुराणपंथी रवैये के बावजूद विज्ञान द्वारा विकसित साधनों का उपयोग करता रहता और इनको गालियां भी देता रहता है। यह विरोधाभास आगे भी जारी रहेगा। वैज्ञानिक क्रांति आगे भी जारी रहेगी। विकसित हो रहे साधनों का दुरुपयोग और सदुपयोग दोनों होते रहेंगे। तथ्य काफी लोगों के जीवन में विकसित होता रहेगा परंतु मिथक भी फलते फूलते रहेंगे। जो इन सब को साक्षी भाव से देखेगा वह एक बेहतर जीवन बिताएगा परंतु जो व्यक्ति तार्किक हो कर भी यदि उद्विग्न मन होगा तो सदा परेशानी में रहेगा। मनोविज्ञान आपको साक्षी भाव की तरफ ले जाने का प्रयास करता है। यदि आप जीवन में आनंद के साथ रहना चाहते हैं तो तर्क वितर्क को त्याग कर संवाद की तरफ जाइए और जहां संवाद संभव नहीं है वहां से दूर हट जाइए क्योंकि कुतर्क से कोई भी समाधान संभव नहीं है और किसी भी कुतर्क पर बातचीत द्वारा विजय संभव नहीं है। जीवन का एक मात्र उद्देश्य समाजोपयोगी होने के साथ उस स्थिति में प्रविष्ट होना है जहां स्वयं का जीवन भी आनंद से लबालब रहे। यह स्थिति पाना कोई कठिन कार्य नहीं है।

आवश्यकता निरर्थक परंपराओं की लीक और भीड़ से अलग हट कर चलने और सोचने की है। जीवन यात्रा में न तो घटनाओं के पात्र बनिए और न ही दर्शक। सिर्फ और सिर्फ साक्षी बनिए और दर्शन शास्त्रीय मनःस्थिति रखिए। यही सकरी-सी डगर आनंद की तरफ जाने का रास्ता है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना "मुंशी प्रेमचंद साहित्य रत्न सम्मान-2024" से सम्मानित

मुंशी प्रेमचंद जी की 144 वीं जयंति के उपलक्ष में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा एवं अभाकाम संस्था द्वारा इंदिरा गाँधी पंचायत राज संस्थान, जयपुर में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित समारोह में कवि व साहित्यकार, प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना को, जो कि वर्तमान में स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर, जयपुर में होम्योपैथिक चिकित्सक व वरिष्ठ आचार्य हैं। उन्हें "मुंशी प्रेमचंद साहित्य रत्न सम्मान - 2024" से लेखन व समीक्षा वर्ग में विशिष्ठ पुरस्कार से नवाजा गया। पदाधिकारियों ने सम्मान स्वरूप उन्हें, शॉल, दुपट्टा ओढ़ाकर, श्री फल, प्रमाण -पत्र व प्रतीक चिह्न देकर शुभकामनाएं दी व उनके लेखन की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि पूर्व राज्यसभा सासंद रविन्द्र किशोर सिन्हा रहे।

अ. भा. कायस्थ महासभा एवं अभाकाम संस्था ने प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना को सम्मानित किया।

इंदरगढ़ में होगा लहरिया महोत्सव

गंगापुर सिटी, (निसं)। मां इंदरगढ़ बिजासन सेवा समिति के तत्वावधान में श्रावण मास में इंदरगढ़ दरबार जिला बूंदी में 10 एवं 11 अगस्त को लहरिया महोत्सव मनाया जायेगा। समिति अध्यक्ष देवी चरण गर्ग ने बताया कि 10 अगस्त शाम चार बजे कर्मचारी कॉलोनी स्थित मैरिज होम के सामने से सैकड़ों भक्त बस द्वारा इंदरगढ़ के लिए रवाना होंगे।

इंदरगढ़ में चेयरमैन की धर्मशाला में रात्रि नौ बजे से विशाल भगवती जागरण का आयोजन होगा व 11 अगस्त प्रातः सात बजे 108 मीटर लंबा लहरिया लेकर सभी भक्त माता रानी के दर्शन के लिए रवाना होंगे। समिति महामंत्री वेद प्रकाश मंगल ने बताया कि 11 अगस्त प्रातः नौ बजे माता के भवन के पास गंगापुर वालों की निर्माणधिन धर्मशाला मार्ग पर हरियाला राजस्थान के तहत वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि लाखेरी उप जिला कलेक्टर कैलाश गुर्जर होंगे।

'ट्रैफिकिंग रोकने के लिए जनजाति क्षेत्र में सख्त कानून की जरुरत'

उदयपुर, (निसं)। भारतीय न्याय संहिता के नए खंड में ट्रैफिकिंग को एक अपराध के रूप में शामिल करना स्वागत योग्य है, परंतु उदयपुर संभाग सहित ऐसे क्षेत्र जो अन्य राज्यों की बॉर्डर से लगे हैं, जनजाति क्षेत्रों में आज भी ट्रैफिकिंग की शिकायत मिलती रहती है। पिछले एक साल में जिला प्रशासन, उदयपुर पुलिस एवं संस्थान के प्रयास से 50 से ज्यादा बच्चे ट्रैफिकिंग से छुड़वाए गए। ट्रैफिकिंग रोकने के लिए जनजाति अंचल को ध्यान में रखते हुए सशक्त कानून बनाने की आवश्यकता है। जहां बच्चों के बेहतर पुनर्वास पर भी कार्य किया जाए। उक्त विचार शहर के हिरण मगरी सेक्टर-6 स्थित गायत्री सेवा संस्थान के विवेकानन्द सभागार में विश्व मानव दुर्व्यापार विरोधी दिवस के उपलक्ष में गायत्री सेवा संस्थान द्वारा आयोजित एक्सेस टू जस्टिस न्याय तक पहुंच विषय पर संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए राजस्थान बाल आयोग, राजस्थान सरकार के पूर्व सदस्य एवं बाल अधिकार विशेषज्ञ डॉ. शैलेंद्र पण्ड्या ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर एक्सेस टू जस्टिस के प्रमुख रवि कांत ने जानकारी देते हुए बताया कि हालांकि हम लोग दुर्व्यापारियों के चुंगल से बच्चों को मुक्त कराने के लिए सामूहिक रूप से राज्य सरकारों के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन अब हमारी रणनीतियों में सुधार की आवश्यकता है। ट्रैफिकिंग पर नवीनतम रिपोर्ट बताती है कि किस तरह ट्रैफिकर (दुर्व्यापारी) रोजना नए और आधुनिक तरीके अपना रहे हैं। इस अवसर पर गायात्री सेवा संस्थान के प्रतिनिधि एवं न्याय तक पहुंच कार्यक्रम के सहयोगी सदस्य रामचंद्र मेघवाल ने बताया कि 180 सामाजिक संगठनों के गठबंधन एक्सेस टू जस्टिस द्वारा आज राष्ट्र के विभिन्न जिलों में संगोष्ठी सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर दुर्व्यापार के खिलाफ एकजुट होकर शपथ ली जा रही हैं। संस्थान द्वारा आज दुर्व्यापार रोकने में सहयोगी कानून, योजनाओं एवं सरकारी प्रावधानों की जानकारी वाले पोस्टर को जारी किया गया। संगोष्ठी में उदयपुर संभाग के विभिन्न जिलों में कार्यरत स्वंय सेवक, राजस्थान चाइल्ड एडवाइजरी ग्रुप (आर. केग.) के सदस्य एवं एक्सेस टू जस्टिस की टीम उपस्थित रही।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 31 जुलाई, 2024

सावन मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, रोहिणी नक्षत्र 10:45 तक, ध्रुव योग रात्रि 8:48 तक, बाल करण दिन 3:56 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:15 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग दिन 3:56 से सूर्योदय तक है। कुमार योग दिन 10:12 पर समाप्त होगा। आज कामिका एकादशी व्रत, रोहिणी व्रत है। शुक्र सिंह राशि से दिन 2:33 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:13 तक, शुभ 10:53 से 12:33 तक, चर 3:52 से 5:32 तक, लाभ 5:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक मामलों में परेशानियां अभी बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज परिजनों के व्यवहार के कारण मन व्यथित हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।